



SHRI MAHIPATRAI PRATAPRAI KAVI

Shri Mahipatrai Prataprai Kavi (popularly known as Kavi) is an international puppeteer and the founder of "Puppets and Plays" which was founded in the year 1973.

2. Born on 28th March, 1931, Shri Kavi did his Diploma in Acting from Darpana Academy of Performing Arts and participated in many dramas that were being performed at the academy. He was there at the academy from 1960 -1970. However, during his tenure at the academy, he wasn't satisfied with his acting career and always felt that something was missing and started to search for something new. That is when, he saw Meherben Contractor manipulating her puppets. On seeing her do that, he was convinced that Puppetry is for him and that is when he decided to plunge in to it.

3. Shri Kavi learnt the art of Puppetry under the guidance of his Guru Meherben Contractor and while learning this art form, he realised that in order to perform this art, a puppeteer needs to master other art forms such as Reader, Writer, Poet, Actor, Drawing, Sculptor, Music, and command over Languages.

4. Till date, Shri Kavi has written and directed over 200 plays in various languages such as Gujarati, Hindi, Sindhi, Urdu, English and French. He has performed more than 4000 shows in India and abroad. He has successfully used this art to represent Indian History, Culture and Heritage with some of his plays like Krishnaleela (performed with Leather puppets in languages like French and English); Ramayana (performed with Leather puppets in languages like French and English); Umar Marvi (performed with Rod and Glove puppets in Sindhi Language); Stories of Panchtantra (performed in Gujarati, Hindi and English); Tagore's Dak Ghar (Post-Office) and Bhartendu Harishchandra's Andher Nagri Chaupat Raja.

5. Shri Kavi has also conducted workshops on puppetry in various educational institutions such as CEPT, PDP, Gujarat University Department of Journalism, etc. He has also designed some courses to include puppetry in children's education, puppetry for social causes and awareness, etc.

6. Shri Kavi is the recipient of numerous awards and honours viz. Gaurav Puraskar by the Sangeet Natak Akademi, Gujarat in 1993-94; Zaverchand -Meghani Award by the Government of Gujarat in 2000-01; TagorePuraskar by the Sangeet Natak Akademi, New Delhi in 2012; Gujarat Lok kala Rashtriya -Gaurav Puraskar in 2018.



श्री महिपतराय प्रतापराय कवि

श्री महिपतराय प्रतापराय कवि (लोकप्रिय रूप से कवि के रूप में प्रसिद्ध हैं) एक अंतरराष्ट्रीय कठपुतली कलाकार हैं और वर्ष 1973 में स्थापित "पपेट्स एंड प्लेज" के संस्थापक हैं।

2. 28 मार्च, 1931 को जन्मे, श्री कवि ने दर्पण एकेडमी ऑफ परफॉर्मिंग आर्ट्स से अभिनय में डिप्लोमा किया और अकादमी में होने वाले कई नाटकों में भाग लिया। वह 1960—1970 तक अकादमी में थे। हालाँकि, अकादमी में वह अपने अभिनय करियर से संतुष्ट नहीं थे और हमेशा कुछ कमी महसूस करते थे और उन्होंने कुछ नए की तलाश शुरू कर दी। तभी, उन्होंने मेहरबेन कॉन्ट्रैक्टर का कठपुतली प्रदर्शन देखा। उन्हें ऐसा करते देखकर, श्री कवि को यकीन हो गया कि कठपुतली उन्हीं के लिए है और उन्होंने उसी समय इसमें आगे बढ़ने का फैसला कर लिया।

3. श्री कवि ने अपने गुरु मेहरबेन कॉन्ट्रैक्टर के मार्गदर्शन में कठपुतली की कला सीखी और इस कला के रूप को सीखने के दौरान, उन्होंने महसूस किया कि इस कला के लिए एक कठपुतली कलाकार को पाठक, लेखक, कवि, अभिनेता, चित्रकार, मूर्तिकार भी होना चाहिए तथा संगीत और भाषाओं में पारंगत होना चाहिए।

4. अब तक, श्री कवि ने गुजराती, हिंदी, सिंधी, उर्दू, अंग्रेजी और फ्रेंच जैसी विभिन्न भाषाओं में 200 से अधिक नाटकों का लेखन और निर्देशन किया है। भारत और विदेशों में 4000 से अधिक शो किए हैं। उन्होंने कृष्णलीला (चमड़े की कठपुतलियों के साथ, फ्रेंच और अंग्रेजी जैसी भाषाओं में प्रदर्शित); रामायण (चमड़े की कठपुतलियों के साथ फ्रेंच और अंग्रेजी जैसी भाषाओं में प्रदर्शित); उमर मारवी (रॉड और ग्लव्स कठपुतलियों के साथ सिंधी भाषा में प्रदर्शित); पंचतंत्र की कहानियां (गुजराती, हिंदी और अंग्रेजी में प्रदर्शित); टैगोर का डाक घर और भारतेंदु हरिश्चंद्र का अंधेर नगरी चौपट राजा जैसे कुछ नाटकों द्वारा भारतीय इतिहास, संस्कृति और विरासत दर्शाने के लिए इस कला का सफलतापूर्वक उपयोग किया है।

5. श्री कवि ने विभिन्न शैक्षिक संस्थानों जैसे सीईपीटी, पीडीपीयू, गुजरात विश्वविद्यालय के पत्रकारिता विभाग आदि में कठपुतली पर कार्यशालाएं भी आयोजित की हैं। उन्होंने बच्चों की शिक्षा, सामाजिक कार्यों और जागरूकता आदि के लिए कठपुतली कला को शामिल करने हेतु कुछ पाठ्यक्रम भी तैयार किए हैं।

6. श्री कवि को कई पुरस्कारों और सम्मानों से सम्मानित किया गया है जिसमें 1993—94 में संगीत नाटक अकादमी, गुजरात द्वारा गौरव पुरस्कार; 2000—01 में गुजरात सरकार द्वारा झवेरचंद—मेघानी पुरस्कार; 2012 में संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली द्वारा टैगोर पुरस्कार; 2018 में गुजरात लोक कला राष्ट्रीय—गौरव पुरस्कार शामिल है।